संतान प्रश्न

सुधा गुप्ता

षट् पंचाशिका

1 प्रश्न लग्न से विषम भावों में अर्थात 3,5,7,9,11वें भावों में शनि हो तो पृच्छक के घर पुत्र होगा और यदि प्रश्न लग्न से सम भावों अर्थात दूसरे, चौथे, छठें, आठवें, दसवें या बारहवें भावों में शनि हो तो पुत्री का जन्म बताना चाहिए।

वृहज्जातक में वराह मिहिर के अनुसार -

2 यदि लग्न, सूर्य, गुरू व चंद्रमा बली होकर विषम राशि व विषम नवांश में हो तो पुत्र का जन्म होता है। अन्यथा सम राशि में हो तो पुत्री का जन्म कहना चाहिए

3 सूर्य व बृहस्पति दोनों विषम राशि में हो तो कन्या का जन्म होगा

4 चन्द्र, मंगल व शुक्र द्विस्वभाव राशि में हो और इन पर बुध की दृष्टि हो तो जुड़वा सन्तान होती है।

प्रश्न वैष्णव - लग्नेश व पंचमेश विषम राशि में हो, होराधिपति (काल होरा लग्न) पुरूष ग्रह हो, और लग्न भी पुरूष राशि हो तो इन योगों में पुत्र का जन्म होता है।

महोत्पत - पंचम व एकादश में शुभ ग्रह गर्भ को सुरक्षा प्रदान करते हैं। विषम राशि में गुरू व शुक्र बली हो तो पुत्रप्रद और गुरू, मंगल, चन्द्र समराशिगत हो तो पुत्रीकारक होते हैं

वासवानन्द - गुरू, सूर्य विषम राशि में बली हो तो पुत्र पद समराशि में मंगल, शुक्र, चन्द्र कन्या पद होते हैं

- यदि दोपहर से पूर्व प्रश्न किया गया हो और चन्द्रमा, सूर्य से आगे हो तो पुत्र एवं अपराह्न में प्रश्न हो और चन्द्रमा सूर्य से पीछे हो तो कन्या

का जन्म होता है।

– यदि प्रश्न लग्न में, 1,2,3,5,7,9 भावों में पुरूष ग्रह हो तो पुत्र, अन्यथा कन्या होती है

पुत्र पुत्री के प्रसिद्ध योग **प्रश्न ज्ञान/भहोत्पत**

– प्रश्न लग्न में पुरूष राशियों का षड्वर्ग हो और बलवान पुरूष ग्रहों (सूर्य, मंगल, गुरू) से दृष्ट हो तो पुत्र का जन्म होता है। यदि लग्न में स्त्री राशियों का षडवर्ग हो और स्त्री कारक ग्रहों की दृष्टि हों तो कन्या का जन्म होता है

– विषम राशि में स्थित पञ्चमेश के विषम राशिगत लग्नेश देखता हो तो पुत्र का जन्म होता है और सम राशिगत पञ्चमेश पर सम राशिगत लग्नेश की दृष्टि हो तो कन्या का जन्म होता है।

– लग्नेश एवं पञ्चमेश विषम राशि में हो तो पुत्र का और सम राशि में हो तो कन्या का जन्म होता है।

–लग्न में विषम राशि में सूर्य हो तो पुत्र का जन्म होता है

– तिथि प्रहर, वार एवं नक्षत्र की संख्या का योग कर उसमें से एक घटाकर सात का भाग दें। विषम अंक शेष हो तो पुत्र और सम अंक शेष बचे तो कन्या का जन्म होता है।

शिशु जीवित रहेगा या नहीं

– प्रश्न कुण्डली में शुक्र और सूर्य 8वें स्थान में हो तो नवजात शिशु का मरण होता है।

– लग्न से 2,8 एवं 12वें स्थान में पाप ग्रह तो उत्पन्न शिशु का मरण होता है

– पाप ग्रह व्ययेश (12L) दग्ध (सूर्य के साथ) हो और वह आपोक्लिम स्थान में हो तो नवजात शिशु की मृत्यु हो जाती है या गर्भपात हो जाते हैं

– व्ययेश शुभ ग्रहों से दृष्ट / युक्त हो कर केन्द्र में स्थित हो तो शिशु जीवित रहता है

– पूर्ण चन्द्र शुभ ग्रहों से हृदय / युक्त होकर केन्द्र में स्थित हो तो शिशु दीर्घायु होता है।

भुवन दीपक–

– यदि प्रश्न लग्न में मंगल के साथ शनि बैठा हो तो गर्भपात होता है

– चंद्रमा यदि मंगल की या शनि की राशि में हो तथा इनसे युत या दृष्ट हो तो गर्भपात होता है

– यदि पञ्चमेश अस्त, नीच राशिगत, पापग्रह से पीड़ित या विनष्ट हो तो भी गर्भपात होता है

– यदि प्रश्न कुण्डली में पंचमेश और लग्नेश दोनों अष्टम स्थान में स्थित हो, ये जितने ग्रहों से युत या दृष्ट हो उतनी बार गर्भपात होता है।

– शिशु के जन्मते ही मरणे / या मरे हुए बच्चों के जन्म के योग

– पंचमेश मंगल या राहू से युक्त होकर त्रिक स्थान में स्थित हो

– पंचमेश और गुरू अष्टम स्थान में हो

– पंचम और सप्तम स्थान में बलवान पाप ग्रह हो

– पंचम स्थान में धनु राशि हो, उसमें राहु बैठा हो और किसी पाप ग्रह की उस पर दृष्टि हो

– यदि प्रश्न कुंडली में जहां कहीं भी चार स्थानों में दो–दो ग्रह स्थित हो तो जुड़वा सन्तानों का जन्म होता है

– यदि प्रश्न लग्न में द्विस्वभाव राशि हो तथा लग्न में या पंचम स्थान में शुभ ग्रह बैठे हो तो जुड़वा संतान का जन्म होता है यदि लग्न में मिथुन और धनु पुरूष राशियों हो तो दो पुत्र यदि कन्या और मीन में स्त्री राशियां हो तो दो कन्याओं का जन्म होता है

– गर्भाधान या प्रश्न के समय सूर्य चन्द्र, मंगल, गुरू और शुक्र द्विस्वभाव राशि या द्विस्वभाव राशि के नवांश में स्थित हो तो जुड़वा का जन्म होता है

– यदि गुरू और सूर्य मिथुन और धनु राशि या इनके नवांशों में स्थित हो तथा इन पर बुध की दृष्टि हो तो दो लड़कों का जन्म होता है

– यदि चंद्रमा मंगल और शुक्र, कन्या और मीन राशि में या इनके

नवांशों में स्थित हो तो दो कन्याओं का जन्म होता है

प्रश्न तंत्र

– यदि लग्नेश या चंद्रमा का, पंचमेश के साथ इत्थसाल हो यदि पंचमेश लग्न में हो और लग्नेश और चंद्र पंचम भाव में हो तो संतान का जल्दी जन्म हो, यदि नक्त योग हो तो देर से हो, यदि द्विस्वभाव लग्न हो और शुभ ग्रहों से युक्त हो तो जुड़वा संतान हो

– लग्न और पंचमेश पुरूष राशि में हो तो पुत्र, चंद्र यदि विषम राशि में हो, पुरूष ग्रहों से इत्थसाल में हो तो पुत्र संतान

– दोपहर के बाद प्रश्न हो, चंद्र सूर्य से पीछे हो तो पुत्री संतान

– होरा स्वामी पुरूष ग्रह हो और पुरूष राशि में हो पुत्र का जन्म

– यदि चंद्र या बुध पंचम में हो, या पंचमेश के साथ युत हो या पंचमेश को देखता हो, या पंचमेश ऊंच का हो तो संतान होगी

– यदि लग्नेश और चंद्रमा पंचम में हो – पत्नी गर्भवती है

– चर लग्न पापयुक्त हो और waning घटते चंद्र से इत्थसाल में हो / या चर लग्न चंद्र युक्त हो और वक्री ग्रह से इत्थसाल में हो – गर्भपात की संभावना

– यदि द्वादशेश केंद्र में हो शमयुक्त या शुभदृष्ट हो – संतान गर्भ में जीवित रहे, यदि शुक्ल पक्ष में प्रश्न हो और चंद्र द्वादश भाव में शुभ युक्त हो – संतान गर्भ में जीवित रहे।

– यदि द्वादशेश पाप ग्रह हो और अस्त हो, या आपोक्लिम भावों में हो और शुभ युक्त या शुभ दृष्ट ना हो तो संतान जीवित नहीं रहेगी।

*****